In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: I

हि
२३०
३५

कृत साहित्य सौरभ

म्पू भारत

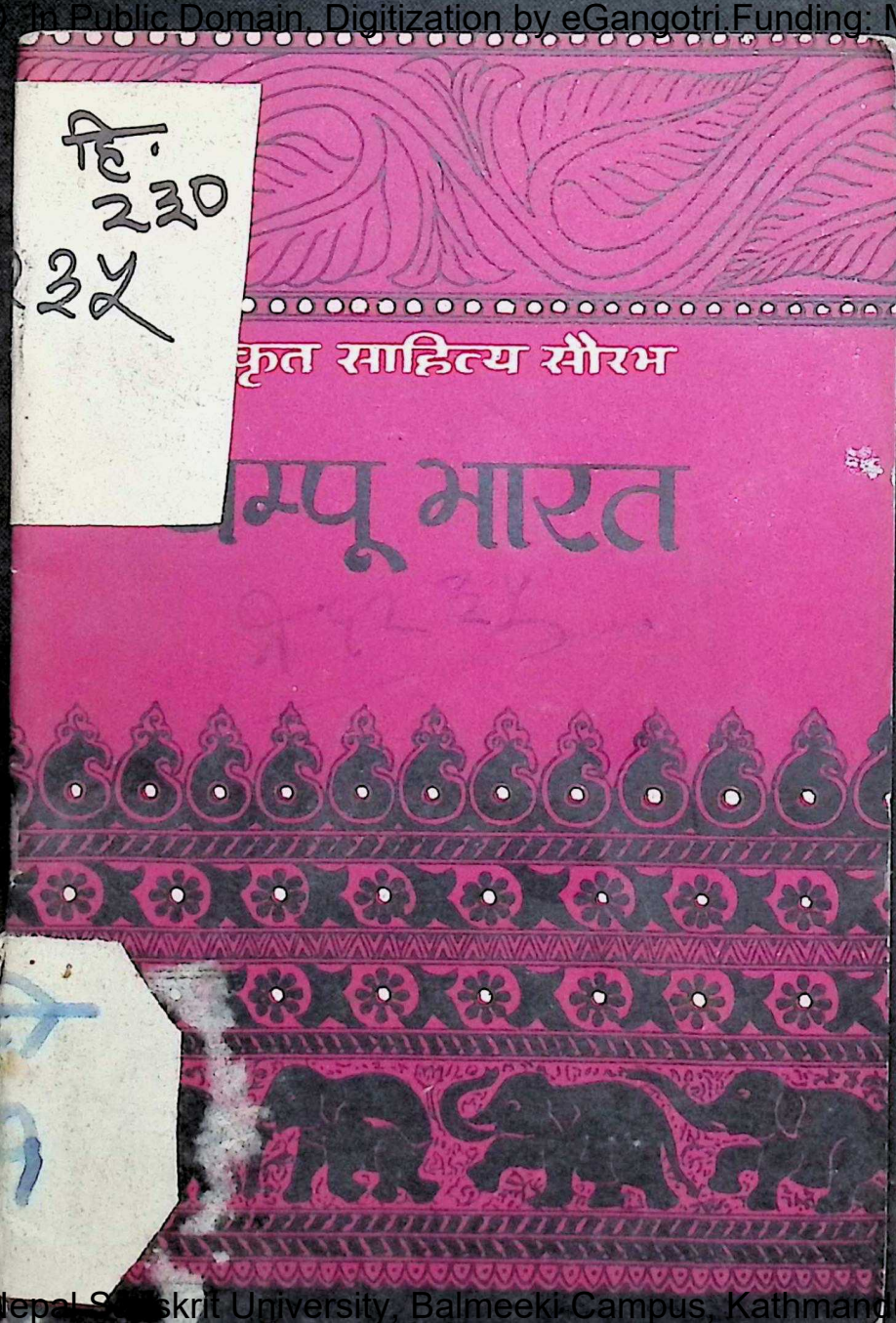

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

३५

अनंतकवि-कृत

चम्पू भारत

Acc. No. 9234
हि. 230

द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'
द्वारा
कथा-सार

विष्णु प्रभाकर
द्वारा
संपादित

पुस्तक भेंट के निमित्त

१९६०
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

पहली बार, १९६०
मूल्य
[redacted] नये पैसे

मुद्रक
हीरा आर्ट प्रेस
दिल्ली-६

...Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

भूमिका

संस्कृत साहित्य में काव्य के तीन प्रकार माने हैं—गद्य, पद्य और चम्पू। छन्द-शास्त्र के नियमों के अनुकूल जो रचना होती है उसे पद्य कहा जाता है। जिस रचना में छन्द का प्रयोग नहीं होता वह गद्य है। जिस रचना में गद्य और पद्य दोनों का समुचित उपयोग हो वह चम्पू है। चम्पू काव्य की पहली रचना नल-चम्पू का, जिसके लेखक **त्रिविक्रम भट्ट** हैं, समय दसवीं सदी है। जातकों में तथा प्राचीन संस्कृत में कुछ ऐसे नमूने मिलते हैं, जिन्हें चम्पू-काव्य का पूर्व रूप कहा जा सकता है, परन्तु प्रथम ग्रंथ नल-चम्पू ही है। इसी काल में सोमप्रभसूरि ने यशस्तिलक चम्पू की रचना की, जिसका कथासार इसी माला में प्रकाशित हो चुका है।

अनन्त भट्ट रचित इस चम्पू भारत या 'भारत चम्पू' में महाभारत की कथा का विस्तार से वर्णन हुआ है। मूल ग्रंथ में बारह स्तवक हैं, और यह ग्रंथ बहुत ही प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय है। इसका कारण महाभारत की कथा ही नहीं है, बल्कि इसकी वर्णन-शैली है, जो विशेषरूप से प्रांजल और सरस है। कल्पना की नवीनता भी पाठक के मन को हर लेती है।

—सम्पादक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

हमारा संस्कृत-साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। भारतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा अंग हो, जिसके सम्बन्ध में मूल्यवान सामग्री का अनन्त भंडार संस्कृत-साहित्य में उपलब्ध न हो। लेकिन खेद की बात है कि संस्कृत से अपरिचित होने के कारण हिन्दी के अधिकांश पाठक उससे अनभिज्ञ हैं। उनमें जिज्ञासा है कि वे उस साहित्य से परिचय प्राप्त करें, परन्तु उसका रस वे हिन्दी द्वारा लेना चाहते हैं।

पाठकों की इसी जिज्ञासा को देखकर संस्कृत के महाकवियों, नाटककारों आदि की प्रमुख रचनाओं को छोटी-छोटी कथाओं के रूप में हम हिन्दी में प्रस्तुत कर रहे हैं। पुस्तकों की भाषा बहुत सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए टाइप भी मोटा लगाया गया है।

इन पुस्तकों का सम्पादन हिन्दी के सुलेखक श्री विष्णु प्रभाकर ने बड़े परिश्रम से किया है।

आशा है, हिन्दी के पाठकों को इन पुस्तकों से संस्कृत-साहित्य की महान रचनाओं की कुछ-न-कुछ झांकी अवश्य मिल जायगी। पूरा रसास्वादन तो मूल ग्रन्थ पढ़कर ही हो सकेगा। यदि इन पुस्तकों के अध्ययन से मूल पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा हुई तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

चम्पू भारत

: १ :

चन्द्रवंश में उत्पन्न हुए कुरुवंशी वीर राजाओं की हस्तिनापुरी नाम की एक राजधानी थी, जो अपनी सुन्दरता से देवपुरी को भी मात करती थी।

जब पाण्डु नाम के राजा इस नगरी में सिंहासन पर बैठे तो इसका गौरव और भी बढ़ गया। यह पाण्डु राजा बड़े शूर-वीर और दानी थे। उनकी कुन्ती और माद्री दो रानियां थीं।

एक बार राजा पाण्डु अपनी दोनों रानियों को साथ लेकर शिकार को गये। हिमालय के निकट, वन में राजा ने बहुत से जानवरों का शिकार किया। इसके बाद एक सुन्दर से हिरन के जोड़े पर राजा की निगाह पड़ी। निशाना साधकर राजा ने नर हिरन को तीर मारा।

तीर लगते ही वह हिरन तो गिर गया, परन्तु एक मुनि प्रकट हो गये। उन मुनि का नाम किन्दम था। पत्नी के साथ, हिरन का रूप धारण किये, आनन्दपूर्वक वहां घूम रहे थे। उन्होंने क्रोध में भर कर राजा को शाप दिया कि तुम जब कभी इस प्रकार अपनी पत्नी के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

साथ घूमोगे तो अचानक तुम्हारे प्राण निकल जायंगे।

मुनि शाप देकर चले गये और राजा पाण्डु चिन्ता में डूबने-उतराने लगे। उन्होंने राज-पाट छोड़ दिया और दोनों पत्नियों के साथ वन में जाकर मुनियों की तरह जीवन बिताने लगे।

एक दिन दुखी होकर उन्होंने अपनी बड़ी रानी कुन्ती से कहा, "मेरे बाद चन्द्रवंश का अन्त हो जायेगा। मेरे कोई पुत्र नहीं है, इस बात से मैं बहुत दुखी हूँ। रानी, मेरा दुख तुम्हीं मिटा सकती हो।"

कुन्ती ने कहा "महाराजा, तुम दुखी मत होओ। मैं जब बालिका थी तब एक बार दुर्वासा ऋषि हमारे घर आकर रहे थे। मेरे पिता ने उनकी सेवा का भार मुझे सौंपा था। साल भर तक मौन रह कर जिस दिन दुर्वासा ने समाधि तोड़ी, मैं अकेली उनके पास बैठी थी। ऋषि मेरी सेवा से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने मुझे एक मन्त्र दिया। उस मन्त्र के बल से मैं चाहूं तो किसी भी देवता को बुलाकर पुत्र पा सकती हूँ।"

राजा यह सुनकर बहुत खुश हुए। उन्होंने कुन्ती से कहा, "ठीक है, तुम ऐसा ही करो।"

तब कुन्ती ने धर्मराज से युधिष्ठिर, वायु से भीम-सेन और इन्द्र से अर्जुन को पाया। उसी मन्त्र के बल से रानी माद्री ने भी अश्विनी कुमार देवों से दो पुत्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पाये। वे थे नकुल और सहदेव।

ये पांचों बालक वहीं आश्रम में धीरे-धीरे बड़े होने लगे। वसन्त ऋतु आई तो एक दिन अचानक राजा पाण्डु अपनी छोटी रानी माद्री के साथ लता-कुंज में घूमने चले गये। वहाँ वह इतने आनन्द-विभोर हो उठे कि उन्हें किन्दम मुनि के शाप की याद न रही। परिणाम यह हुआ कि उनके प्राण-पखेरू उड़ गये। रानी माद्री उनके साथ सती हो गई। कुन्ती रो-धोकर बच्चों को पालने लगी।

छोटे भाई के परलोक-वास का समाचार सुनकर अन्धे धृतराष्ट्र आश्रम में आये और बालकों के साथ कुन्ती को फिर हस्तिनापुरी ले गये।

धृतराष्ट्र अपने पुत्रों के समान ही अपने भतीजों को प्यार करते थे। यह देखकर दुर्योधन बहुत जलता था, ख़ास तौर पर वह भीमसेन से बहुत अधिक द्वेष रखने लगा।

: २ :

एक बार सभी राजकुमार—कौरव और पाण्डव—गंगा के तट पर जल-विहार करने गये। दुर्योधन ने पहले से ही कुमन्त्रणा कर रखी थी। आधी रात को, जब भीमसेन बेसुध सो रहा था, कुछ सँपेरे उसके बिस्तर के पास पहुँचे और चुपचाप पिटारियाँ खोल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

दीं। बड़े-बड़े ज़हरीले साँप जीभ निकाले दौड़े और भीमसेन के शरीर में जगह-जगह काट लिया। भीमसेन निश्चय ही उस विष से मर जाता, परन्तु वन-देवता वहाँ उसकी रक्षा को आ पहुँचे। उन्होंने सारा विष खींच लिया और इस तरह भीमसेन बच गया।

सुबह को जब दुर्योधन ने भीम को भला-चंगा देखा तो वह बड़ा चकित हुआ। अब उसने दूसरी तरकीब सोची। उसने भीम को अपने साथ दावत खाने का न्योता दिया और रसोइया लोगों से मिलकर उसके भोजन में विष डलवा दिया। वह भोजन करते ही भीम अचेत हो गया तो दुर्योधन ने उसे रस्सियों से बँधवा कर गंगा में फिकवा दिया।

गंगा में डूबकर भीम पाताल जा पहुँचा। वहाँ नागराज वासुकि रहता था। वह भीम को देखकर चौंक उठा। परिचय पाकर नाग लोगों ने भीम का खूब आदर-सत्कार किया। उसे अमृत-पान कराया। अब तो भीम फिर से अच्छा-खासा तगड़ा हो गया।

इधर माँ कुन्ती और चारों भाई 'हाय-हाय' करते उसे खोजते-फिरने लगे। आठ दिन बीत गये। नवें दिन अचानक भीम उनके सामने आ खड़ा हुआ। उसे जीता-जागता पाकर वे खुशी से फूले नहीं समाये। कौरवों पर मानो पाला पड़ गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

इसके बाद भीष्म पितामह ने गुरु द्रोणाचार्य को राजकुमारों का गुरु नियत किया। उन्होंने बहुत ही थोड़े समय में इनको धनुर्विद्या में पारंगत कर दिया।

उनकी बाण-विद्या से सन्तुष्ट होकर एक दिन द्रोणाचार्य ने कहा, "तुम सब अपनी शिक्षा समाप्त कर चुके हो। अब मुझे गुरु-दक्षिणा चाहिए। क्या दोगे गुरु-दक्षिणा में ? मेरा एक शत्रु है। उसका नाम है द्रुपद। तुम लोग उसे पकड़कर मेरे सामने ले आओ। बस, यही मेरे लिए गुरु-दक्षिणा होगी।" तब सभी राजकुमार उत्साह से भरकर द्रुपद की राजधानी पर जा चढ़े, लेकिन द्रुपद ने सभी राजकुमारों को पीछे हटा दिया। कोई भी उसे पकड़ न सका।

तब अर्जुन आगे बढ़ा। उसने बड़ी तेज़ी से तलवार चलाई और द्रुपद को ज़िन्दा पकड़ लिया। फिर उसे गुरुजी के आगे ला खड़ा किया। द्रोणाचार्य ने द्रुपद से कहा, "अरे नीच, जब हम दोनों गुरु से शिक्षा पा रहे थे तब तूने प्रतिज्ञा की थी कि राजा होने पर मुझे आधा राज्य देगा। लेकिन जब मैं तुझसे अपना भाग माँगने गया तो तूने मुझे अपमानित करके निकाल दिया। अब बोल, क्या कहना चाहता है ?"

द्रुपद ने लज्जित होकर आधा राज्य दे दिया। फिर उसने द्रोण को मारने के लिए एक यज्ञ किया। उससे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

एक कन्या द्रौपदी और एक पुत्रधृष्टद्युम्न उसे प्राप्त हुए।

इसके बाद, धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को युवराज पद दे दिया। इससे दुर्योधन, शकुनि आदि बहुत कुढ़े, पर उनकी एक न चली। युधिष्ठिर बड़ी योग्यता से राज-कार्य देखने लगे। पर दुर्योधन दिन-रात अपने बाप के कान भरता रहा। धीरे-धीरे धृतराष्ट्र अपने भतीजों से जलने लगे। उन्होंने बहाना करके पाण्डवों को वारणावत नगर भेज दिया। वहाँ पहले से ही एक लाख का घर बना दिया गया था। वह पाण्डवों को जीवित ही जला देना चाहते थे।

पाण्डवों को विदुर के एक दूत से पहले ही यह समाचार मिल गया था। एक रात, भीमं ने आप ही उस घर में आग लगा दी और सुरंग की राह निकल गया।

एक दासी अपने पाँच पुत्रों के साथ उसी घर में रहती थी। वे सब जल मरे और दुर्योधन का जासूस पुरोचन भी जल गया। नगरवासियों ने समझा कि पाण्डव ही अपनी माता सहित जलकर मर गये हैं। कौरव लोग इस समाचार से फूले नहीं समाये। इधर भीम सुरंग के पार निकलकर एक वन में जा पहुँचा। वहाँ उसका परिचय हिडिम्बा से हुआ। उसके भाई हिडिम्ब राक्षस को भीम ने मार डाला और फिर हिडिम्बा से विवाह भी कर लिया। हिडिम्बा के एक पुत्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हुआ, जिसका नाम घटोत्कच रखा गया। फिर घूमते-घामते व्यास मुनि के आश्रम में आ पहुँचे। वहाँ मुनि से उपदेश लेकर वे लोग एकचक्रा नगरी में आये और एक ब्राह्मण के घर में आनन्द से रहने लगे।

एक दिन उस ब्राह्मण की पत्नी अपने इकलौते बेटे को गोद में लेकर रुदन करने लगी। कुन्ती ने उससे रोने का कारण पूछा तो बोली, "यमुना के किनारे बक नामक राक्षस रहता है। उसके भोजन के लिए इस नगर से रोज एक युवक और बहुत-सा अन्न देने का नियम बना है। आज मेरे इस लाड़ले की बारी है। बहन, कोई मेरे लाल को बचानेवाला नहीं।"

कुन्ती ने कहा—"तुम रोओ मत बहन, मेरे पाँच लड़के हैं। मैं अपने एक लड़के को राक्षस के पास भेज दूँगी। तुमने मेरी बहुत सहायता की है। अब तुम्हारी सहायता करना मेरा धर्म है।"

कुन्ती ने भीमसेन को सारी घटना सुनाई तो वह फौरन राज़ी हो गया। शाम को गाड़ी भर अच्छा-अच्छा भोजन लेकर उस वन में पहुँचा और उसे खुद ही खाने लगा। राक्षस यह देखकर बहुत नाराज हुआ, परन्तु भीम ने परवा न की। पूरा आहार करके ही वह उठा और फिर उसे आनन-फानन में मार गिराया।

इसके उपरान्त, एक दिन कुछ ब्राह्मण पाण्डवों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

दरवाज़े पर रात बिताने के लिए रुके। उन लोगों ने कहा, "राजा द्रुपद की बेटी द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है। हम वहीं जा रहे हैं।" पाण्डव भी उन्हींके साथ हो लिये। जब वे वहाँ पहुँचे तो स्वयंवर की तैयारी हो चुकी थी। सैकड़ों राजा आये थे। कृष्ण-बलराम भी आये थे। कर्ण-दुर्योधन भी पहुँचे थे। जब द्रौपदी पालकी में बैठकर सभा-मण्डप में आ गई तो उसके भाई ने खड़े होकर घोषणा की, "सुनो वीर लोगो, यह धनुष है, यह बाण है और यह आकाश में चक्कर काटता निशाना है। जो इस निशाने को तीर से गिरा देगा वही मेरी बहन का स्वामी बन जायगा।"

केवल अर्जुन ही ऐसा कर सका। द्रौपदी ने उसीके गले में वरमाला पहना दी। फिर विधिपूर्वक पाँचों पाण्डवों के साथ द्रौपदी का विवाह हो गया और राजा द्रुपद ने बहुत-सा दान-दहेज उन्हें दिया।

यह सुनकर धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को अपने पास बुलवाया और उन्हें आधा राज्य सौंप दिया। पाण्डव सुखपूर्वक रहने लगे।

: ३ :

धृतराष्ट्र की आज्ञा से युधिष्ठिर ने इन्द्रप्रस्थ में अपना डेरा जमाया। वहाँ एक दिन अचानक नारद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मुनि आ पहुँचे और उन्होंने कहा, "तुम लोग सम्हल-कर रहना। द्रौपदी के कारण आपस में लड़ाई-झगड़ा मत कर बैठना।" तब पाण्डवों ने नारद के सामने ही प्रतिज्ञा की कि हम लोग बारी-बारी से एक-एक साल द्रौपदी के पास रहेंगे और अगर कोई ग़लती से दूसरे भाई के साथ बैठी द्रौपदी के आगे पहुँचेगा तो वह एक साल परदेश में जाकर रहेगा।

दैवयोग से, एक दिन एक ब्राह्मण राजा के दरवाज़े पर आकर चिल्लाने लगा, "अरे राजा, कोई चोर मेरी सब गायें चुरा ले गया। तुम चोर को पकड़कर मेरी गायें वापस दिलवाओ।" अर्जुन वहीं बैठा था। वह ब्राह्मण को समझा-बुझाकर भीतर महल में धनुष-बाण लेने गया। वहाँ अचानक उसकी नज़र युधि-ष्ठिर के साथ बैठी द्रौपदी पर गई। बाहर आकर उसने चोरों को पकड़कर ब्राह्मण की गायें दिलवादीं। उसके बाद प्रतिज्ञा के अनुसार वह साल भर के लिए परदेशी हो गया। परदेश में घूमते-घामते उसने नागकन्या उलूपिका और राजकन्या चित्राङ्गदा से विवाह किया। चित्राङ्गदा का पुत्र बभ्रुवाहन हुआ। वहाँ से अर्जुन प्रभास तीर्थ में जा पहुँचा। वहीं अर्जुन की कृष्ण से भेंट हुई और वे अर्जुन को द्वारकापुरी ले गये। द्वारकापुरी में कृष्ण की बहन सुभद्रा थी। इन दोनों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

में प्रेम हो गया तो कृष्ण की सम्मति से एक रात अर्जुन और सुभद्रा रथ में बैठकर निकल गये। साल पूरा हो चुका था। इन्द्रप्रस्थ में आकर अर्जुन ने सुभद्रा से विधिवत् विवाह किया और उससे अभिमन्यु का जन्म हुआ। द्रौपदी ने भी पाँच पुत्रों को जन्म दिया।

गरमी आ गई तो एक दिन कृष्ण और अर्जुन अपनी स्त्रियों को साथ लेकर यमुना किनारे जल विहार करने गये। जब ये लोग नहा-धोकर वहाँ से चलने लगे तो सहसा इनके आगे अग्निदेव प्रकट हो गये। बोले, "मैं बहुत भूखा हूँ। मेरे भोजन का कुछ प्रबन्ध होना चाहिए।" कृष्ण की अनुमति से अर्जुन ने अग्निदेव की प्रार्थना मान ली और बाण छोड़कर खाण्डववन में आग लगा दी। अग्निदेव उस सम्पूर्ण वन को चाट गये।

: ४ :

इसी स्थान पर इन्द्रप्रस्थ नगर बसाया गया और यहीं 'मय' नाम के शिल्पी ने युधिष्ठिर के लिए एक अति सुन्दर महल बना दिया। तब नारदजी की राय से राजा युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ करने का विचार किया। भीम, अर्जुन और कृष्ण राजाओं को विजय करने चले। इन लोगों ने सबसे पहले जरासन्ध को युद्ध के लिए ललकारा। भीम के साथ जरासन्ध का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

भयंकर मल्लयुद्ध पन्द्रह दिन तक होता रहा। अन्त में भीम ने जरासन्ध को मार गिराया। दूसरे राजाओं ने योंही अपनी हार मान ली और सबने युधिष्ठिर को भारी-भारी भेंटें पेश कीं। तब बहुत बड़े पैमाने पर यज्ञ हुआ। यज्ञ के उपरान्त युधिष्ठिर की आज्ञा से सहदेव पूजन करने उठा तो वह सबसे पहले कृष्ण की ओर बढ़ा। यह देख शिशुपाल क्रोध में भर उठा और खड़ा होकर कृष्ण को गाली देने लगा। कुछ देर तो कृष्ण शान्त रहे, पर जब शिशुपाल अति करने लगा तो कृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से उसका गला काट दिया। सब लोग अपने-अपने घर लौट गये।

दुर्योधन से युधिष्ठिर की यह उन्नति सही नहीं गई। उसने अपने मामा शकुनि से सलाह करके एक षड़यन्त्र रचा। धृतराष्ट्र से उसने पाण्डवों के पास निमन्त्रण-पत्र भिजवाया कि हमने एक नया सभा-भवन बनवाया है। उसके उद्घाटन में तुम लोग पधारो। बेचारे पाण्डव लोग इस छल को समझ न पाये और हस्तिनापुर चले आये। सभा-भवन का उत्सव होता रहा, होता रहा, अचानक शकुनि ने युधिष्ठिर से कहा कि आओ, हो जाँय दो-चार बाज़ी। युधिष्ठिर की अक़ल को जाने क्या हुआ कि वे जुआ खेलने लगे। धूर्त्त शकुनि दाँव-पर-दाँव जीतने लगा। उसने युधि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

ष्ठिर का सारा राज्य जीत लिया। उसी जुए में युधिष्ठिर द्रौपदी को भी हार गये। तब भरी सभा में दुर्योधन ने कहा, "पाण्डवों की पत्नी आज से हमारी पानी भरनेवाली दासी हो गई।" और उसने अपने छोटे भाई दुःशासन को आदेश दिया, "द्रौपदी को अभी जाकर घसीट लाओ और मेरे आगे इसी सभा में पेश करो।"

दुःशासन उठा और उसी समय द्रौपदी को बाल पकड़ कर सभा में खींच लाया। फिर दुर्योधन के कहने से द्रौपदी को नंगा करने लगा।

उसके पति प्रतिज्ञा में बँधे थे। दूसरे सब लोग मूक थे। अन्त में कोई उपाय न देखकर दीन द्रौपदी ने करुणामय भगवान् से पुकार की। तब सबने अचरज से देखा कि द्रौपदी की साड़ी अनन्त हो गई है। दुःशासन सारी शक्ति से साड़ी खींचता गया—खींचता गया, पर उसका अन्त न आया। आखिरकार वह पस्त होकर गिर पड़ा।

उस समय भीम ने प्रतिज्ञा की कि मैं दुःशासन के कलेजे को चीरकर रक्त पिऊँगा और उसी रक्त से द्रौपदी के बाल सींचूंगा। द्रौपदी ने दुर्योधन को शाप दिया, "पापी, जंघा टूटने से ही तेरी मृत्यु होगी।" तब घबराकर धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर का राजपाट उन्हें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

फिर से लौटा दिया ।

पाण्डव लोग इन्द्रप्रस्थ को चल दिये, पर रास्ते में शकुनि आदि ने युधिष्ठिर को फिर जुआ खेलने को कहा । बात कुछ ऐसे कही गई कि युधिष्ठिर फिर लौट आये । दुबारा जुआ शुरू हुआ और इस बार वनवास की शर्त लगी ।

युधिष्ठिर हार गये और शर्त्त के अनुसार अपना सबकुछ तजकर भाइयों को और द्रौपदी को साथ लेकर वनवासी हो गये ।

इसी समय वेदव्यास से इनकी भेंट हुई । इनकी आज्ञा से अर्जुन हिमालय पर्वत पर गया और तपस्या द्वारा शिवजी को प्रसन्न करके उनसे दिव्य अस्त्र पाये ।

: ५ :

जब पाण्डव लोग द्वैतवन में रहते थे, उन्हीं दिनों दुर्योधन भी अपना ठाठबाट दिखलाने के लिए अपना लश्कर लेकर वहाँ आया । वहीं गन्धर्व चित्रसेन से उसका झगड़ा हो गया । देखते-देखते चित्रसेन ने दुर्योधन की सेना की दुर्दशा कर डाली और सबकी आँखों के आगे दुर्योधन को रस्सियों से बाँधकर ले चला । तब दुर्योधन की स्त्रियाँ रोतीं-पीटतीं युधिष्ठिर के पास पहुँचीं । उनके कहने पर अर्जुन और भीम ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

गन्धर्वों को घेर लिया और युद्ध करके दुर्योधन को चित्रसेन से छुड़ा लिया। दुर्योधन बहुत लज्जित हुआ और हस्तिनापुर वापस लौट गया।

इन्हीं दिनों एक और घटना हुई। अचानक एक रात को सूर्यदेव अपने पुत्र कर्ण के आगे आ खड़े हुए। कहने लगे, "तुम शायद जानते नहीं हो कि तुम मेरे बेटे हो। मैं तुम्हें सावधान करने आया हूँ। ये जो तुम्हारे कवच और कुण्डल हैं, इन्हें माँगने के लिए इन्द्र भिखारी बनकर तुम्हारे पास आने वाला है। तुम उसे हरगिज़ मत देना।"

कर्ण ने उत्तर दिया, "पिता, आप कैसी बात कह रहे हैं! द्वार पर आये याचक को मैं किस मुँह से 'ना' कह सकता हूँ?"

सूर्यदेव बोले, "तब फिर तुम मेरी इतनी बात ज़रूर मान लो कि कवच-कुण्डल के बदले तुम इन्द्र से उसकी 'शक्ति' माँग लेना।" इसके बाद सचमुच ही इन्द्र भिखारी का रूप धरकर आये। कर्ण ने उन्हें अपने कवच-कुण्डल दान कर दिये और बदले में 'शक्ति' मांग ली।

उधर पाण्डव लोग घूमते-घामते फिर द्वैतवन में आ गये। तब एक दिन अचानक ही उनके द्वार पर कोई ब्राह्मण रोता हुआ आया और कहने लगा, "एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मृग मेरी यज्ञ की अरणि लेकर भाग गया है। मेरी अरणि दिलवा दो।"

युधिष्ठिर ने अपने भाइयों को साथ लेकर तुरन्त मृग का पीछा किया, पर मृग हाथ न आया। पाण्डव लोग भूख-प्यास से व्याकुल हो उठे थे, एक पेड़ के नीचे विश्राम करने लगे।

फिर पानी की तलाश में एक-एक करके चारों भाई चले गये। जब बहुत देर तक न लौटे तो घबरा कर युधिष्ठिर उन्हें खोजने चले। बहुत दूर युधिष्ठिर ने देखा कि एक बावड़ी के किनारे उनके चारों भाई बेजान होकर पड़े हैं। युधिष्ठिर विलाप करने लगे। बोले, "यह पानी अवश्य ही ज़हरीला है। इस पानी को पीकर मैं भी अब मर जाऊँगा।" पर पानी पीने के लिए ज्योंही वह झुके, कहीं से आवाज़ आई, "राजा, मेरी बातों का उत्तर दिये बिना ही तुम्हारे भाइयों ने पानी पीना चाहा था, इसीलिए इनका यह हाल हुआ। तुमसे मैं कुछ प्रश्न करता हूँ, उनका उत्तर दो। तभी इस पानी को पा सकोगे।"

युधिष्ठिर ने उसके प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर दिया तो वह प्राणी उनके आगे प्रकट हो गया।

यह और कोई नहीं स्वयं 'धर्म' ही था। उसने प्रसन्न होकर युधिष्ठिर को आशीर्वाद दिया और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

चारों भाइयों को भी जीवित कर दिया। ब्राह्मण की अरणि भी लौटा दी। वही मृग का रूप धरकर अरणि को ले भागा था।

: ६ :

इस प्रकार पाण्डवों के वनवास के बारह साल बीत गये और 'अज्ञातवास' वाला तेहरवां साल आ गया। तब वे लोग वेष बदलकर राजा विराट के यहाँ नौकर हो गये।

द्रौपदी 'मालिन' बन गई थी और उसने अपना नाम सैरन्ध्री रख लिया था। रानी सुदेष्णा का भाई कीचक द्रौपदी के रूप पर मोहित हो गया। वह उसे अपने पास बुलाने लगा तो द्रौपदी भीम के पास पहुँची। भीम रसोइया बन गया था। उसने द्रौपदी का रूप धारण कर लिया और कीचक को मिलने के लिए बुलाया। कीचक तो पागल था ही, तुरन्त नाच-घर में पहुँचा; लेकिन भीम ने उसे मार डाला। कीचक के बहुत से भाई थे। वे जब कीचक को जलाने लगे तो द्रौपदी को भी बलपूर्वक चिता में रख दिया कि इसीके कारण हमारे भाई की जान गई है। द्रौपदी चिल्लाई और भीम फिर दौड़ा आया और उसने कीचक के सभी भाइयों को मार दिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दुर्योधन को जब ये सब समाचार मिले तो उसने कहा कि निश्चय ही कीचक को मारनेवाला भीम है और पाण्डव लोग विराट के यहाँ वेष बदलकर रह रहे हैं। चलो, उन लोगों को पकड़ लिया जाय और उनकी शर्त्त तोड़ दी जाय।

उसने पहले अपने साथी सुशर्मा को विराट नगर पर चढ़ाई करने भेजा। वह विराट की गायों को हाँक ले चला तो राजा विराट वेश बदले हुए पाण्डवों को साथ लेकर युद्ध करने निकला। गायें पाण्डवों ने छुड़ा लीं और घमासान युद्ध हुआ। युद्ध में सुशर्मा हारा और भाग गया।

: ७ :

तब फिर दुर्योधन अपनी सेना लेकर आया। उसके सैनिक डंडे मार-मार कर गायों को भगा ले गये। चारों ओर हा-हाकार मच गया। पिछले युद्ध में अर्जुन नहीं गया था। वह वेष बदलकर 'वृहन्नला' बना हुआ विराट की लड़की उत्तरा को नाचना-गाना सिखाता था।

अब जब विराट का लड़का उत्तर लड़ने चला तो द्रौपदी के कहने से अर्जुन उसका सारथी बन गया। उत्तर ने युद्ध-भूमि में दुर्योधन की सेना देखी तो घबरा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कर घर की ओर भागने लगा। अर्जुन ने उसे धीरज बँधाया, फिर उसे सारथी बनाकर अर्जुन स्वयं लड़ने लगा। उसने एक सम्मोहन-अस्त्र छोड़ा, जिसके प्रभाव से सारी शत्रु-सेना को नींद आ गई। उत्तर ने दुर्योधन आदि सभी वीरों के कपड़े उतार लिये। कौरवों की जब आँख खुली और अपने को नंगा पाया तो वे बड़े लज्जित हुए। चुपचाप अपनी राजधानी को लौट गये।

इधर जब उत्तर विजयी होकर घर आया तो उसका बड़ा आदर-सत्कार हुआ। तबतक कोई नहीं जानता था कि ये पाँच वेष बदले हुए पाण्डव हैं। उत्तर ने ही यह बात पिता विराट को बताई। तब राजा विराट इन पाँचों से हाथ जोड़कर कहने लगा, "आप लोगों के साथ जो मैंने नौकरों-जैसा वर्ताव किया, मेरे उस अपराध को आप लोग क्षमा कर दीजिये।" फिर विराट ने अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को बुलाकर अपनी कन्या उत्तरा से उसका विवाह कर दिया। इस प्रकार पाण्डवों का 'अज्ञातवास' वाला यह तेहरवां साल भी पूरा हो गया।

: ८ :

अपने राज्य को लौटाने का दूसरा कोई उपाय न पाकर युधिष्ठिर ने परिचित राजा लोगों को विराट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नगर में आमंत्रित किया। इस प्रकार जब युद्ध की तैयारियाँ होने लगीं तो बन्धुजनों के नाश की कल्पना से युधिष्ठिर भयभीत हो उठे। उन्होंने कृष्ण को हस्तिनापुर भेजा कि एक बार वे दुर्योधन को समझा-कर सन्धि करने की चेष्टा करें। कृष्ण हस्तिनापुर गये और दुर्योधन के आगे सन्धि का प्रस्ताव रखा। लेकिन उसने किसी की न सुनी और सभा से उठ गया। कृष्ण ने दूसरे सभासदों को समझाया कि युद्ध हुआ तो दुर्योधन की पराजय होगी और सारे कौरवों का नाश हो जायगा। सभा में सन्नाटा छा गया, पर दुर्योधन आग-बबूला हो उठा। उसने अपने साथियों से सलाह की कि कृष्ण बाहर आये तो उसे पकड़ लिया जाय।

यह जानकर कृष्ण का मुखमंडल लाल हो उठा और उन्होंने उसी समय उस सभा के बीच में ही अपना विशाल 'विश्वरूप' प्रकट कर दिया। भगवान् के उस भयंकर रूप को देखकर दुर्योधन और उसके साथी बेहोश हो गये और भक्तजन उनकी स्तुति करने लगे। तब कृष्ण फिर अपने मधुर रूप में हो गये और भीष्म आदि को समझाकर पाण्डवों के पास लौट गये।

इसी बीच एक घटना और हो गई। एक दिन जब कर्ण गंगा-किनारे जप कर रहा था तो अचानक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

कुन्ती उसके पास पहुँची और उसे बताया कि वह उसका बेटा है। वह बोली, "मैं ही तुम्हारी मां हूं और पाण्डव तुम्हारे सहोदर भाई हैं। सो तुम दुर्योधन का संग-साथ तज दो और अपने भाइयों की रक्षा करो। तुमने जरा-सी याचना करने पर इन्द्र को अपने कवच-कुण्डल दे दिये। मैं तो तुम्हारी मां हूं। क्या मेरी यह प्रार्थना स्वीकार नहीं करोगे ?"

कर्ण ने विनम्रता से उत्तर दिया, "मां, तुम बहुत बड़े वंश की बेटी हो और बहुत बड़े वंश की वधू हो। तुम ही सोचो कि जिस आदमी ने अपने प्राण मुझे सौंप रक्खे हैं, जिसने मुझे पूरे अंगदेश का राज दे रक्खा है, उसको धोखा देना उचित है क्या ? नहीं मां, मुझसे यह नहीं हो सकेगा। मैं विवश हूं। मुझे क्षमा करो, मैं दुर्योधन से अलग नहीं हो सकता।"

कुन्ती ने कुछ न कहा। चुपचाप घर लौट गई।

: ६ :

इसके बाद युद्ध की तैयारियां होने लगीं। कुरुक्षेत्र के विशाल मैदान में दोनों ओर की सेनाएँ आ डटीं।

उनके कोलाहल से आकाश कांपने लगा। तब दुर्योधन ने भीष्म को और पाण्डवों ने धृष्टद्युम्न को अपना-अपना सेनापति बनाया। युद्ध के बाजे बजने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

लगे। शंख-घोष और वीरों के जयकार से आकाश गूँज उठा। धीरे-धीरे दोनों ओर के सैनिक आगे बढ़े और देखते-देखते मारकाट मच गई।

एक ओर हाथियों की सेनाएँ आपस में भिड़ गईं। दांतों से, पैरों से, सूँड़ों से उनमें कशमकश होने लगी। दूसरी ओर घोड़ों की सेना में घमासान लड़ाई छिड़ी थी। तेजस्वी घोड़े अगले पैरों से आसमान में उठ-उठ जाते थे और तरह-तरह से शत्रुओं का नाश करते थे। यही हाल रथोंवाली सेना का था और ऐसी ही हालत पैदल सेना की थी। तब धृष्टद्युम्न ने इतना भयंकर युद्ध किया कि शत्रु-सेना में हाहाकार होने लगा और भगदड़ मच गई।

यह देखकर भीष्म का चेहरा लाल हो आया और उन्होंने बाणों की अविराम वर्षा शुरू करदी। अब तो चारों ओर प्रलय मच उठी। हज़ारों सैनिक बात करते मारे गये। हाथियों और घोड़ों की लाशों का ढेर लग गया और ऐसा लगा कि अब पाण्डवों की सेना का ख़ात्मा ही हो जायगा। लेकिन तभी शाम हो गई और लड़ाई भी बन्द कर दी गई।

लेकिन जब नौ दिन तक बराबर यही हालत होती रही तो दसवें दिन अर्जुन ने 'शिखण्डी' को सामने खड़ा करके भीष्म से रण ठाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

शिखंडी को देखा तो भीष्म ने साँस खींचकर कहा, "यह तो पहले स्त्री था। इसके साथ मैं हरगिज़ युद्ध न करूंगा।" इतना कहकर अपना धनुष-बाण नीचे रख दिया। पर अर्जुन बराबर उनके ऊपर तेज-से-तेज बाण छोड़ता रहा, यहांतक कि सारी देह छलनी हो गई। तब वे वीर-शिरोमणि, बाल-ब्रह्मचारी भीष्म वहीं रणभूमि में शर-शैया पर लेट गये, अपने प्राण तजने के लिए।

: १० :

भीष्म के बाद द्रोणाचार्य सेनापति बने और फिर जोर का युद्ध शुरू हो गया। बाणों की वर्षा के कारण धूलि के बादल चारों ओर छा गये। लाशों से जमीन पटने लगी और भगदड़ मच गई।

यह देखकर अर्जुन आगे बढ़े और उन्होंने गुरु द्रोणाचार्य को रोका। उनके बाणों के आगे कौरव-दल टिक न सका, उसके छक्के छूट गये।

दूसरे दिन द्रोण के कहने से दुर्योधन ने त्रिगर्त के वीरों को अर्जुन से युद्ध करने भेजा और द्रोणाचार्य युधिष्ठिर को ढूंढ़ने पांडवों की ओर बढ़े। सत्यजित युधिष्ठिर की रक्षा के लिए सामने खड़ा था। सबके देखते-देखते द्रोण ने उसका सिर काट डाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तब भीम भागे आये, धृष्टद्युम्न आये और नकुल-सहदेव भी भागे आये। भीम ने गुरुदेव के घोड़ों को और धृष्टद्युम्न ने सारथी को मार दिया और नकुल-सहदेव ने उनका धनुष टुकड़े-टुकड़े कर डाला।

यह देखकर भगदत्त अपनी हाथी-सेना के साथ भीम की ओर झपटा। उसके सुप्रतीक हाथी को आता देखकर पांडव-सेना में भगदड़ मच गई, पर भीम नहीं हिला। उसने सभी हाथियों को यमलोक पहुंचा दिया, लेकिन जब चिंघाड़ता हुआ सुप्रतीक उसकी ओर झपटा तो फिर भीम को सिवा भागने के और कोई रास्ता नजर न आया।

तब अर्जुन ने आगे बढ़कर उस सुप्रतीक हाथी को और साथ ही भगदत्त को भी स्वर्ग भेज दिया।

अगले दिन गुरु द्रोणाचार्य ने चक्र-व्यूह की रचना की। अर्जुन और अभिमन्यु ही उसे तोड़ना जानते थे, पर अर्जुन कहीं दूसरी ओर युद्ध कर रहा था, सो उसे तोड़ने के लिए अभिमन्यु गया। अभिमन्यु को सेना का नाश करता देख कर्ण, जयद्रथ आदि सात वीरों ने मिलकर अकेले उसको घेर लिया और मार डाला।

अर्जुन के शोक का पारावार न रहा। जयद्रथ के कारण दूसरे वीर व्यूह में न घुस सके थे, इसलिए उसने प्रतिज्ञा की कि कल सूरज छिपने से पहले ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

मैं जयद्रथ को मार डालूंगा। यदि ऐसा न कर सका तो आग में जलकर आत्महत्या कर लूंगा।

दूसरे दिन अर्जुन ने बहुत ही भीषण युद्ध किया। दिन डूबने लगा, पर जयद्रथ को न पा सका। सबको लगा कि अब अर्जुन को आग में प्रवेश करना होगा। सूरज डूबता दीखा तो जयद्रथ भी बड़ी शान से सामने आ गया। परन्तु भगवान की माया अपार है। अचानक सूरज फिर से चमकने लगा। जयद्रथ कांप उठा। उसे भागने का मौका न मिला। अर्जुन ने बड़ी सफ़ाई से उसका ख़ात्मा कर डाला।

पर द्रोणाचार्य बराबर पांडवों की सेना का नाश कर रहे थे। उनको कैसे मारा जाय ? कृष्ण ने एक उपाय किया। भीम हाथियों को मार रहा था। उनमें अश्वत्थामा नाम का एक हाथी था। भीम ने उस हाथी को मार गिराया तो कृष्ण ने समझा-बुझा कर युधिष्ठिर से कहलवाया कि अश्वत्थामा मारा गया। द्रोण ने समझा कि उनका पुत्र अश्वत्थामा मारा गया। बस उन्होंने धनुष नीचे रख दिया और सिर पकड़ कर बैठ गये। तब अपने पिता का बदला लेने के लिए धृष्टद्युम्न ने उनका सिर काट लिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

: ११ :

अब दुर्योधन ने कर्ण को सेनापति का भार सौंपा। शल्य उसका सारथी बना और फिर सेनाएं आपस में भिड़ गईं। उनके भयंकर युद्ध से जमीन कांपने लगी। इधर कर्ण अपने अचूक बाणों से नर-संहार कर रहा था, उधर दुःशासन भी पांडवों की सेना को बुरी तरह काटने लगा। अचानक भीम की नजर उसपर पड़ गई। वह सबको छोड़कर उसकी ओर बढ़ा और फिर इन दोनों में घोर गदा-युद्ध होने लगा। देखते-देखते भीम ने दुःशासन को पटक दिया और कलेजा चीरकर उसका खून पीने लगा। प्रतिज्ञा के अनुसार उसने रक्त से द्रौपदी के केश भी रंग दिये। अर्जुन ने कर्ण के पुत्र वृषसेन को भी मार गिराया। तब कर्ण क्रोध से भर उठा। अर्जुन का बध करने के लिए उसने पन्नगास्त्र छोड़ा। जीभें लपलपाता वह अस्त्र अर्जुन की ओर तीव्रता से चला। यह देखकर कृष्ण ने रथ को नीचा कर दिया और तब वह अस्त्र अर्जुन का मुकुट काटता हुआ चला गया। अब अर्जुन को भी जोश आ गया और वह कर्ण पर तरह-तरह के बाण छोड़ने लगा। अन्त में अपने तीक्ष्ण बाणों से कर्ण के प्राण हर लिये। अपने प्रियमित्र और सेनापति कर्ण की मृत्यु से दुर्योधन बहुत अधिक दुखी हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

इसके बाद कौरव-सेना की बागडोर शल्य के हाथों में दी गई। शल्य ने दिन भर अपना पराक्रम दिखाया, परन्तु शाम होते-होते युधिष्ठिर ने शक्ति छोड़कर उसे यमपुर भेज दिया। तबतक नकुल ने मामा शकुनि और सहदेव ने शकुनि के पुत्र उलूक को भी मार गिराया। एक-एक करके कौरवों के सारे योद्धा रण में काम आ गये। सारी सेना का नाश हो जाने पर अति खिन्न हो दुर्योधन युद्धभूमि से चल दिया और समन्तपञ्चक के समीप एक विशाल सरोवर में जा छिपा। पांचों भाई भी खोजते-खोजते वहीं पहुंचे और भीम उस सरोवर की सीढ़ियों पर खड़ा होकर दुर्योधन के प्रति विष-भरे वचन बोलने लगा। उन कटु वचनों को सुनकर क्रोध से कांपता दुर्योधन जल से बाहर निकल आया और दोनों में भयानक गदा-युद्ध छिड़ गया।

धीरे-धीरे सारी भीड़ वहीं पर जमा हो गई। ये दोनों वीर इतनी तेजी से चक्राकार घूम रहे थे कि देखने पर पता ही न चलता था कि कौन-सा भीम है और कौन-सा दुर्योधन है। यह महायुद्ध बहुत देर तक चलता रहा। अन्त में कृष्ण ने भीम को इशारा किया और उसने गदा मारकर दुर्योधन की जांघ तोड़ दी।

उसी रात को अश्वत्थामा पांडवों के शिविर में घुस गया। उसने द्रौपदी के भाई धृष्टद्युम्न को मार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

डाला। फिर गाढ़ी नीद में सोये द्रौपदी के पांच पुत्रों को पञ्च-पाण्डव समझकर मार दिया। उसके बाद सरोवर के किनारे पहुँचा और दुर्योधन से बोला, "महाराज, मैंने पांडवों को समाप्त कर दिया !" दुर्योधन इस समाचार से बहुत प्रसन्न हुआ। तभी उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

द्रौपदी को अपने पांचों पुत्रों के मरने का समाचार मिला तो वह बहुत रोई। उसके दुःख से दुखी होकर भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव अश्वत्थामा को खोजने चला और अन्त में व्यास-आश्रम में उन्होंने उसको घेर लिया। थोड़ी देर तो वह इन लोगों से लड़ता रहा। आखिर उसने हार मान ली। भीम ने उसके सिर पर सदा चमकने वाली मणि को निकाल लिया और गुरु-पुत्र समझकर उसे जीता छोड़ दिया। यह मणि पांडवों ने द्रौपदी को सोंप दी। इस प्रकार यह कौरवों और पांडवों का प्रलय-काल के समान नर-संहारकारी महायुद्ध समाप्त हो गया।

धृतराष्ट्र को जब पता चला कि उसके सब पुत्र युद्ध में मारे गये तो वह बेहोश होकर गिर पड़ा। विदुर और संजय बड़ी कठिनता से उसे होश में ला पाये। फिर गान्धारी को साथ लेकर वह रण-भूमि में पहुँचा और एक-एक पुत्र की लाश छूकर बुरी तरह

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus. Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

विलाप करने लगा। तब कृष्ण और वेदव्यास रण-भूमि में पहुँचे। इन दोनों ने समझा-बुझा कर उसके चित्त की व्यथा दूर की। उसी समय पांडव भी वहां आ गये और युधिष्ठिर ने पैरों पड़कर उससे क्षमा-याचना की। उसके बाद सब लोग गंगा-किनारे गये और मरने वालों का श्राद्ध-तर्पण किया।

यह सब काम पूरा करके, युधिष्ठिर कृष्ण के साथ हस्तिनापुर में आये। वहां उनका जोर-शोर से स्वागत हुआ। एक दिन के लिए युधिष्ठिर और द्रौपदी राजा के पुराने महल में रहे, फिर वे अपने निजी महलों में चले गये।

इसके बाद, एक शुभ दिन, शुभ मुहूर्त्त में कृष्ण के हाथों युधिष्ठिर को राजमुकुट पहना दिया गया। फिर एक विशाल हाथी पर बिठाकर उनका जलूस निकाला गया। कृष्ण, वेदव्यास, विदुर और संजय उस जलूस के आगे-आगे चले। नगरवासियों ने राजा के ऊपर फूलों की वर्षा की और ब्राह्मणों ने आशीर्वाद दिये।

इसके बाद अपने चार भाइयों की सहायता से, लंका से लेकर हिमालय-पर्यन्त भूमि पर युधिष्ठिर धर्म-पूर्वक राज्य करने लगे और भारतवर्ष की जनता सुखपूर्वक रहने लगी।

●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

'संस्कृत साहित्य सौरभ' की पुस्तकें

१. कादम्बरी	१८. मालतीमाधव
२. उत्तररामचरित	१९. शिशुपाल-वध
३. वेणी-संहार	२०. बुद्ध-चरित
४. शकुन्तला	२१. कुमारसंभव
५. मृच्छकटिक	२२. महावीर-चरित
६. मुद्राराक्षस	२३. रत्नावली
७. नलोदय	२४. पंचरात्र
८. रघुवंश	२५. प्रियदर्शिका
९. नागानन्द	२६. वासवदत्ता
१०. मालविकाग्निमित्र	२७. राव -वध
११. स्वप्नवासवदत्ता	२८. सौंदरनंद
१२. हर्ष-चरित	२९. कुंदमाला
१३. किरातार्जुनीय	३०. यशस्तिलक
१४. दशकुमार-चरित : भाग १	३१. तिलक-मंजरी
१५. दशकुमार-चरित : भाग २	३२. प्रतिमा-नाटक
१६. मेघदूत	३३. तीन नाटक
१७. विक्रमोर्वशी	३४. नैषध-चरित

३५. चम्पू भारत

मूल्य प्रत्येक का [illegible] ।४० न० पै०

[illegible] ४० [illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu